International Journal of Multidisciplinary Horizon

ISSN:3049-2017
IJMH 2024; 1(5): 28-32
© 2024 IJMH
www.themultijournal.com
Received: 14-12-2024
Accepted: 21-12-2024
Publish : 26-12-2024

दिलीप कुमार मांझी,
शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग,
जयप्रकाश विश्वविद्यालय,
छपरा, बिहार

प्रो. केदार प्रसाद
प्रोफ़ेसर, राजनीति विज्ञान विभाग,
जयप्रकाश विश्वविद्यालय,
छपरा, बिहार

Correspondence:
दिलीप कुमार मांझी,
शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग,
जयप्रकाश विश्वविद्यालय,
छपरा, बिहार

सारण जिले की भौगोलिक स्थिति : एक अध्ययन

दिलीप कुमार मांझी, प्रो. केदार प्रसाद

परिचय-

आईने-ए-अकबरी में उपलब्ध जिले की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि सारण को बिहार प्रांत के छह सरकारों (राजस्व विभागों) में से एक के रूप में दर्ज करती है, 1765 में ईस्ट इंडिया कंपनी को दीवानी देने के समय, आठ थे सारण और चंपारण सहित सरकारें। बाद में इन दोनों को मिलाकर सारण नामक एक इकाई का निर्माण किया गया। सारण (जिले की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के साथ- जैसा कि चंपारण के पास उपलब्ध है) को पटना डिवीजन में शामिल किया गया था जब 1829 में आयुक्त मंडल की स्थापना की गई थी। इसे 1866 में चंपारण से अलग कर दिया गया था जब इसे (चंपारण) एक अलग जिले में गठित किया गया था। सारण को 1908 में तिरहुत प्रमंडल का हिस्सा बनाया गया था। इस समय तक इस जिले में सारण, सीवान और गोपालगंज तीन अनुमंडल थे। 1972 में पुराने सारण जिले का प्रत्येक अनुमंडल एक स्वतंत्र जिला बन गया। सीवान और गोपालगंज को अलग करने के बाद नया सारण जिला अभी भी छपरा में मुख्यालय है।

सारन नाम की उत्पत्ति के बारे में विभिन्न परिकल्पनाओं को सामने रखा गया है। जनरल कनिंघम ने सुझाव दिया कि सारण को पहले सारण या शरण के रूप में जाना जाता था जो सम्राट अशोक द्वारा निर्मित एक स्तूप (स्तंभ) को दिया गया नाम था। एक अन्य दृष्टिकोण यह मानता है कि सारण नाम सारंगा-अरण्य या हिरण वन से लिया गया है, यह जिला प्रागैतिहासिक काल में जंगल और हिरणों के व्यापक विस्तार के लिए प्रसिद्ध है। इस जिले से संबंधित सबसे पुराना प्रामाणिक ऐतिहासिक तथ्य या रिकॉर्ड शायद 898 ईस्वी से संबंधित हो सकता है, जो बताता है कि सारण के दिघवारा दुबौली गांव ने राजा महेंद्र पालदेवस के शासनकाल में जारी एक ताम्रपत्र की आपूर्ति की थी।

सारण जिला भारत के बिहार राज्य के अड़तीस जिलों में से एक है। जिला सारण प्रमंडल का एक हिस्सा है, जिसे जिले के मुख्यालय - छपरा के बाद छपरा जिले के रूप में भी जाना जाता है। सारण जिले का क्षेत्रफल 2,641 वर्ग किलोमीटर (1,020 वर्ग मील) है, सारण में कुछ गाँव हैं जो अपने ऐतिहासिक और सामाजिक महत्व के लिए जाने जाते हैं। उन गांवों में से एक रामपुर कल्लन है जो छपरा शहर के उत्तर में लगभग 10 किमी की दूरी पर स्थित है। इस गांव ने स्वतंत्रता आंदोलन में एक सराहनीय भूमिका निभाई। सरदार मंगल सिंह को स्वतंत्रता आंदोलन में उनके योगदान के लिए व्यापक रूप से जाना जाता था|

भौगोलिक अनुसंधान में, हम स्थानिक सारांश के माध्यम से सामान्यीकरण करने के लिए एक क्षेत्र या किसी क्षेत्र का चयन करते हैं। समय और स्थान के माध्यम से अध्ययन क्षेत्र की समझ विकसित करना महत्वपूर्ण है। पृष्ठभूमि में, यह अध्याय सारण जिले के बारे में एक विस्तृत भौगोलिक ज्ञान का विस्तार करता है। सारण जिले में ऐतिहासिक पहलू, भौगोलिक विशिष्टता और जनसांख्यिकीय पहलुओं के साथ-साथ विशाल सामाजिक और सांस्कृतिक आयाम हैं जो शोधकर्ता के मन को जकड़ लेते हैं।

सारण भारत के बिहार प्रान्त का एक जिला है। सारण जिले में 20 तालुक, 1764 गांव और 6 कस्बे हैं। जनगणना भारत 2011 के अनुसार, सारण जिले में 631097 घर हैं, जिनकी जनसंख्या 3951862 है, जिनमें 2022821 पुरुष और 1929041 महिलाएं हैं। 0-6 आयु वर्ग के बच्चों की जनसंख्या 681142 है जो कुल जनसंख्या का 17.24% है। सारण जिले का लिंगानुपात 918 की तुलना में लगभग 954 है जो बिहार राज्य का औसत है। सारण जिले की साक्षरता दर 54.59% है, जिसमें से 63.56% पुरुष साक्षर हैं और 45.19% महिलाएँ साक्षर हैं। सारण का कुल क्षेत्रफल 2641 वर्ग किमी है, जिसका जनसंख्या घनत्व 1496 प्रति वर्ग किमी है। कुल जनसंख्या में से 91.06% जनसंख्या शहरी क्षेत्र में और 8.94% ग्रामीण क्षेत्र में रहती है। सारण जिले में कुल जनसंख्या का 12% अनुसूचित जाति (SC) और 0.93% अनुसूचित जनजाति (ST) हैं

सारण जनसंख्या तथ्य-

परिवारों की संख्या	631097
जनसंख्या	3951862
पुरुष जनसंख्या	2022821 (51.19%)
महिला जनसंख्या	1929041 (48.81%)
बच्चो की जनसंख्या	681142
क्षेत्र	2641 km2
जनसंख्या घनत्व/km2	1496
लिंग अनुपात	954
शिक्षा	54.59%
पुरुष शिक्षा	63.56%
महिला शिक्षा	45.19%
अनुसूचित जनजाति (एसटी)%	0.93%
अनुसूचित जाति (एससी)%	12%

(स्रोत-जनगणना 2011)

विवरण	जनसंख्या	प्रतिशत
कुल	3951862	100%
हिन्दू	3534772	89.45%
मुस्लिम	406449	10.28%
धर्म नहीं बताया	7282	0.18%
ईसाई	2330	0.06%
सिख	371	0.01%
जैन	322	0.01%
बुद्ध	229	0.01%
ईसाई	107	0%

(स्रोत-जनगणना 2011)

सारण जिला बिहार की सबसे पुरानी बस्तियों में से एक है, जिसके नाम का उल्लेख सती और रामायण के समय में मिलता है। यह जिला उत्तर बिहार के दक्षिणी भाग के भीतर 25° 36' से 26° 13' उत्तरी अक्षांश और 84° 24' से 85° 15' पूर्वी देशांतर रेखा के बीच स्थित है। सारण उत्तर-दक्षिण दिशा में लगभग 66 किमी लंबा है जबकि पूर्व से पश्चिम की ओर इसकी चौड़ाई 87 किमी है। यह राज्य के पूरे क्षेत्र के 2.8 प्रतिशत के आसपास के क्षेत्र को कवर करता है। स्थान का स्थलाकृतिक क्षेत्र 2641 वर्ग किमी है। और क्षेत्रफल की दृष्टि से राज्य में सोलहवें स्थान पर है। 2011 की जनगणना के अनुसार, क्षेत्र की कुल आबादी 39,43,988 है और यह राज्य का सातवां सबसे अधिक आबादी वाला जिला है। जिले का जनसंख्या घनत्व 1496 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी है। कुल जनसंख्या में लगभग 51 प्रतिशत (20.2 लाख) पुरुष और 49 प्रतिशत (19.3 लाख) महिलाएं हैं। संपूर्ण क्षेत्र का लगभग 91.06 प्रतिशत ग्रामीण बस्ती के अंतर्गत है जबकि शेष 8.9 प्रतिशत जिला शहरी है। गंगा में उस क्षेत्र की दक्षिणी सीमा शामिल है जो पटना और भोजपुर जिलों में स्थित है। जिला सीवान और गोपालगंज के साथ अपनी उत्तरी सीमा साझा करता है। गोपालगंज और गंडक-गंगा नदियों की सीमा के चौराहे पर इसकी चोटी के साथ इसका त्रिकोणीय आकार है। गंगा, घाघरा और गंडक विशिष्ट होने के लिए तीन जलमार्ग हैं जो इस क्षेत्र को शामिल करते हैं। जिला पूरी तरह से मैदानी इलाकों से घिरा हुआ है। बीस ब्लॉकों में से, जिले के भीतर पाँच वैधानिक शहर हैं। ये हैं छपरा, रेवेलगंज, सोनपुर, दिघवारा और मढ़ौरा। मई वर्ष का सबसे गर्म महीना होता है जब आसपास का तापमान 46 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ जाता है। गर्मी मानसून की शुरुआत से पहले जून तक चलती है। जनपद में मानसूनी पवनें जून के मध्य से सितम्बर के अन्तिम छोर तक गतिशील होती हैं। सामान्य वार्षिक वर्षा 837 मिमी है। वार्षिक वर्षा बहते और भूमिगत जल संपत्ति के पुनर्चक्रण और जल तालिका को बनाए रखने का स्रोत है। जिले की लगभग दो-तिहाई भूमि का उपयोग कृषि और पशुपालन के लिए किया जाता है। अध्ययन क्षेत्र संसाधनों से समृद्ध है। इसके पास पर्याप्त जमीन, पानी और मानव संसाधन हैं। इसके बावजूद क्षेत्र में विकास का स्तर कम है।

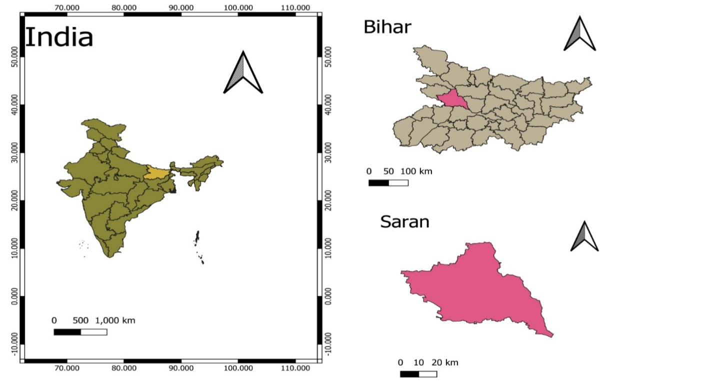

भौतिक विभाग-

जिले में मध्य गंगा मैदान का हिस्सा शामिल है और उत्तर में शिवालिक और भाबर की तलहटी और दक्षिण में छोटानागपुर हाइलैंड के बीच पड़ता है। यह एक सजातीय मैदान के बारे में है। क्षेत्र की औसत ऊंचाई 100 सेमी (76 सेमी) से कम है। इसका सामान्य ढाल उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व दिशा की ओर है। सोनपुर में गंडक और गंगा नदियों के संगम पर दक्षिण-पूर्वी कोने में पूर्ण तल स्थित है, जहाँ औसत समुद्र तल से ऊँचाई 45 मीटर है। ढलान लगभग अप्राप्य है, औसतन केवल 12 सेमी प्रति किमी। समतल मैदान की स्थिरता स्थानों पर निराशा और दलदल से बाधित होती है। इसके परिणामस्वरूप क्षेत्र की राहत सुविधाओं में समान अंतर होता है। तो, जिले में तीन राहत सुविधाओं को बहुत मान्यता दी जा सकती है। वे हैं: -

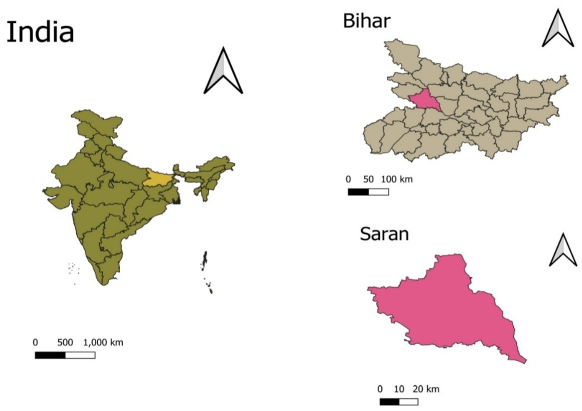

- उच्च नदी किनारे
- विशाल नदियों के तल में 'दियारा' भूमि
- उच्च नदी किनारे

सारण जिला नदियों के बेसिन में स्थित है, जिसका उद्गम हिमालय पर्वत में है। पहाड़ी क्षेत्रों से नीचे लाए गए तलछट के अत्यधिक जमाव के कारण जलमार्गों के तल बढ़ रहे हैं। जिले में बरसात के मौसम में बाढ़ का खतरा रहता है और सीमावर्ती क्षेत्रों में तदनुसार जब भी नदी का पानी ऊपर आता है और उनके किनारों पर पानी डाला जाता है। गाद या बांध जैसी विशेषताओं के विकास में तलछट और बाढ़ का भारी जमाव आ गया है। जलधाराओं का वृद्धि चरित्र ज्यादातर ढलान की अप्रत्याशित गिरावट का परिणाम है जब जलमार्ग हिमालय पर्वत को छोड़ कर गंगा के मैदान में प्रवेश करते हैं। मशरख, ईशुपुर, अमनौर, मढ़ौरा, पानापुर, लहलादपुर, एकमा, जलालपुर, नगरा और गरखा प्रखंड इस भौगोलिक विभाजन के अंतर्गत आते हैं.

नीची गर्त या चौर-

चौर सारण जिले की अनूठी विशेषता है। वे तश्तरी के आकार के दुःख हैं जो मुख्य धारा से दूर स्थित हैं। यह एक वर्ष में छह महीने से अधिक समय तक पानी में डूबा रहता है और इसके पात्र नम होते हैं। ये गड्ढे गंडक, घाघरा और गंगा नदियों से घिरे हुए हैं और हर साल डूब जाते हैं। अत: इस क्षेत्र में खादर नामक नवीन जलोढ़ का निक्षेपण होता है जो ऊपरी मृदा को अतिरिक्त उर्वरता प्रदान करता है। मांझी, रेवेलगंज, छपरा, दिघवारा, पानापुर, सोनपुर, तरैया और दरियापुर ब्लॉक इस क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं।

'दियारा' भूमि-

दियारा क्षेत्र, जिसे स्थानीय रूप से 'दियार' कहा जाता है, विशाल जलधाराओं के तल के करीब स्थित है और हर साल बरसात के मौसम में बाढ़ आ जाती है। घाघरा जलकुंड का दियारा क्षेत्र मांझी और रेवेलगंज ब्लॉक में स्थित है। गंगा दियारा का क्षेत्र छपरा सदर, दिघवारा, सोनपुर और दरियापुर ब्लॉक में फैला हुआ है।

जलवायु-

जलवायु किसी स्थान की लंबी अवधि (20-30 वर्ष) के लिए ली गई औसत मौसम की स्थिति है। यह तापमान, वर्षा, आर्द्रता, वायुमंडलीय दबाव, प्रचलित हवाओं, दबावों या चक्रवातों का गठन करता है। इन सभी घटकों में सबसे महत्वपूर्ण सौर ऊर्जा है। यह जलवायु के अन्य तत्वों को नियंत्रित करता है। सूर्य के चारों ओर पृथ्वी की परिक्रमा के कारण, सौर ताप की मात्रा एक स्थान से दूसरे स्थान पर और समय-समय पर बदलती रहती है। यह वर्ष के विभिन्न समयों में ग्रह के विभिन्न क्षेत्रों में जलवायु परिस्थितियों की विभिन्न व्यवस्थाओं को सामने लाता है। भारत जैसे देश में, जलवायु संस्कृति, प्राकृतिक परिवेश और इसके अलावा खेती के पैटर्न में अंतर लाती है।सारण जिले की जलवायु उत्तर में हिमालय पर्वत की स्थिति, कर्क रेखा और समुद्र से दूरी, ऊंचाई, वनस्पति आवरण, दबाव प्रवणता, अक्षांशीय और देशांतर विस्तार जैसे कई कारकों से प्रभावित होती है।

जिला कर्क रेखा के उत्तर में स्थित है। इस अक्षांश के प्रभाव को अनदेखा नहीं किया जा सकता क्योंकि यह असाधारण रूप से इस क्षेत्र के पास से गुजरता है। निकटतम समुद्री प्रभाव पांच सौ किलोमीटर से अधिक की दूरी पर स्थित बंगाल की खाड़ी क्षेत्र से उत्पन्न होता है। गंगा के मध्य एवं निचले मैदान में किसी प्रकार का अवरोध न होने के कारण वायु निर्विघ्न रूप से इस क्षेत्र में प्रवेश करती है। उत्तर में 100 किमी की दूरी पर स्थित नव वलित पर्वत दक्षिण दिशा से आने वाली पवनों के लिए अवरोधक का कार्य करते हैं। छोटानागपुर हाइलैंड का प्राचीन कठोर खंड लगभग 150 किमी की दूरी पर दक्षिण में स्थित है।

सारण जिला एक संक्रमण क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है, जो पूर्व में बंगाल के मैदान के नम क्षेत्रों और पश्चिम में पूर्वी उत्तर प्रदेश के अर्ध-शुष्क जलवायु क्षेत्र के बीच स्थित है। मौसमी विविधताओं और वर्षा के स्थानिक पैटर्न में महत्वपूर्ण विविधताओं द्वारा चिन्हित तापमान के समान पैटर्न अक्सर निर्धारित किए जाते हैं। उत्तर में पर्वत श्रृंखलाओं

की स्थिति न केवल मानसूनी हवाओं की उत्पत्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है बल्कि हवा की दिशा भी निर्धारित करती है।

ड्रेनेज पैटर्न-

जैसा कि जिले की स्थलाकृति समतल है, इसलिए नदियाँ मुख्य रूप से वृक्ष के समान जल निकासी पैटर्न का पालन करती हैं। गंगा नदी मुख्य नदी है जो छोटी सहायक नदियों द्वारा तीव्र कोणों पर जुड़ती है। यह भी प्रतीत होता है कि वितरिकाएं भी मुख्य धारा के साथ तीव्र कोण बनाने को अलग करती हैं। जिले की महत्वपूर्ण नदियाँ अर्थात गंगा और गंडक और घाघरा परिपक्व और पुराने चरणों की विशेषता का प्रतिनिधित्व कर रही हैं। सिल्ट के भारी भार के कारण नदियों में घुमावदार पाठ्यक्रम और बदलते चैनल हैं। वे तटबंध, गोखुर झील आदि जैसी आकृतियाँ भी बनाते हैं।

बाढ़-

क्षेत्र बाढ़ के अधीन है क्योंकि नदियों ने बेड बढ़ा दिए हैं। जिले के दियारा और चौर क्षेत्र निचले इलाके हैं जो हर साल बाढ़ की चपेट में आते हैं। बाढ़ के विनाशकारी प्रभाव को नियंत्रित करने के लिए सरकार ने कई तटबंधों और बांधों का निर्माण किया है। इन उपायों में बैंकों का विकास, स्थानीय लोगों को बाढ़ की भविष्यवाणी के संदेश, कार्रवाई के सावधानी पाठ्यक्रम, नगर आश्वासन योजना, बाढ़ के स्तर से ऊपर के निपटान स्थलों को ऊपर उठाना, छोटे चैनलों का निर्माण आदि शामिल हैं।

मिट्टी-

मिट्टी एक क्षेत्र की समृद्धि और प्रगति की सीमा का प्रतिनिधित्व करती है। सारण जिले की अर्थव्यवस्था कृषि आधारित है। बोई जाने वाली फसलों की संख्या, प्रति हेक्टेयर उपज, उत्पादों की पोषक सामग्री, सभी मिट्टी की उर्वरता और स्वास्थ्य पर निर्भर करती है। फसल उत्पादन में मिट्टी के महत्व को मनुष्य ने अतीत से ही समझा है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी की प्रगति के साथ, कृषि में नई प्रथाओं की शुरुआत हुई है, जिससे इस क्षेत्र में मिट्टी के संसाधन की गुणवत्ता में काफी बदलाव आया है।

मिट्टी के प्रकार-

सारण जिला भारत के महान उत्तरी मैदानों का हिस्सा है। इन मैदानों का निर्माण हिमालयी और प्रायद्वीपीय दोनों नदियों द्वारा लाए गए जलोढ़ अवसादों के जमाव से हुआ है। सारण में, गंगा नदी प्रणाली तलछट की मोटी परतों के जमाव के लिए जिम्मेदार है। मृदा परिच्छेदिका में गाद, मृत्तिका और बालू के विभिन्न अनुपात देखे जाते हैं।

वन और प्राकृतिक वनस्पति-

सारण जिले का नाम अतीत में घने जंगल के आवरण से पड़ा है। लेकिन, अब वनाच्छादित इलाके कम हो गए हैं और विभिन्न उद्देश्यों के लिए उपयोग किए जाते हैं। वर्तमान में, जिले को विभिन्न उपज देने वाले विशाल कृषि क्षेत्रों में परिवर्तित कर दिया गया है। बांस, ताड़, उपवन, आम, नीम, जामुन, कथल, महुआ आदि जैसे पेड़ों से युक्त वनस्पति के छोटे-छोटे हिस्से देखे जा सकते हैं। किसान इन वनस्पतियों का उपयोग घरेलू और आर्थिक दोनों उद्देश्यों के लिए करते हैं।

हर साल बाढ़ के अधीन क्षेत्रों में झाड़ियाँ और नरकट देखे जा सकते हैं। स्थानीय रूप से पाई जाने वाली झाड़ियाँ नरकट, सिरका आदि हैं। नरकट सामान्यतः जिले के पूर्वी भाग के दलदली क्षेत्रों में उगते हैं। हालांकि, सिरका नमी की कमी वाली मिट्टी में उगता है। कुछ प्राकृतिक खरपतवार भी खेतों में पाए जाते हैं। स्थानीय लोग इन्हें खार, दूब, मूस, बंसाई आदि नामों से पुकारते हैं। ये झाड़ियाँ और खरपतवार बाढ़ के पानी से नष्ट हो जाते हैं। वे विघटित हो जाते हैं और मिट्टी में उर्वरता जोड़ते हैं।

कृषि-

खेती जिले के लोगों का मूल व्यवसाय है और साथ ही लोगों के भरण-पोषण का प्रमुख स्रोत है। किसान आज भी खेती के पुराने तरीके अपनाते हैं। जिला बाढ़ और सूखे की स्थिति से ग्रस्त है। ये सभी कारक क्षेत्र के पिछड़ेपन का कारण बनते हैं।

उद्योग-

क्षेत्र के जिला उद्योग केंद्र द्वारा रखे गए अभिलेखों के अनुसार, वर्ष 2009-10 तक, क्षेत्र में लगभग 5562 नामांकित उद्योग थे और उन्होंने प्रतिदिन लगभग 14252 श्रमिकों को सामान्य रूप से काम दिया। जिले की विशाल आधुनिक नींव के बीच, M.S.C.E, मॉर्टन (इंडिया) लिमिटेड के मरहौरा कन्फेक्शनरी को नोटिस किया जा सकता है। लॉनपुर शुगर वर्क्स लिमिटेड, सारण इंजीनियरिंग कंपनी लिमिटेड, वर्तमान में बंद है। में दी गई जानकारी के अनुसार भारत सरकार के सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय द्वारा प्रकाशित "सरन जिले का संक्षिप्त औद्योगिक प्रोफाइल", 2008-09 के दौरान कुल मिलाकर 5251 लघु उद्योग सूचीबद्ध इकाइयां थीं जो 13602 लोगों को रोजगार दे रही थीं।

महत्वपूर्ण उद्यमों में धातु, लकड़ी और कृषि-प्रसंस्करण शामिल हैं। इस क्षेत्र में अतिरिक्त रूप से 68 औद्योगिक इकाइयों के साथ छपरा स्थित एक चमड़ा समूह है। सारण लोकेल में उद्यमों के प्रकार हैं: कृषि आधारित, ऊनी, रेशम और नकली स्ट्रिंग आधारित वस्त्र, कपड़े और बुनाई के रेडीमेड लेख, लकड़ी / लकड़ी आधारित सामान, कागज और कागज की वस्तुएं, चमड़ा आधारित, सिंथेटिक आधारित, लोचदार, प्लास्टिक और पेट्रो आधारित , खनिज आधारित, धातु आधारित, डिजाइनिंग इकाइयाँ, विद्युत हार्डवेयर और परिवहन वाहन के पुर्जे और मरम्मत उपकरण।

संदर्भ-सूची -

1. अहमद, ए.के. बिहार: एक परिचय, पटना: राष्ट्रीय प्रकाशन, 2009।
2. अहमद, ई. बिहार-ए फिजिकल, इकोनॉमिक एंड रीजनल जियोग्राफी, 1965
3. बिहार की जनगणना, 2011
4. चंदना, आर.सी. पोल्युलेशन का भूगोल, कल्याणी प्रकाशक, नई दिल्ली, 2007।
5. चंद्रमौली, सी. जिला जनगणना पुस्तिका सारण। नई दिल्ली: जनगणना संचालन निदेशालय बिहार, 2011।
6. दास, ए.एन. बिहार राज्य: एक आर्थिक इतिहास। एम्स्टर्डम: VU यूनिवर्सिटी प्रेस, 1992।
7. दयाल, पी. द बिहार प्लेन: ए रीजनल स्टडी। भारतीय भूगोलवेत्ता परिषद, एलजीयू, 5-7, 1968 के लेनदेन।
8. जिला जनगणना पुस्तिका, सारण, 1981, 1991, 2001, 2011
9. जिला गजेट्टर, सारण
10. गौतम, वी.सी. भारतवर्ष का विस्तृत भुगोल। मेरठ: रस्तोगी प्रकाशन, 1995।
11. गोस्वामी, एस. पॉपुलेशन ग्रोथ एंड फीमेल लिटरेसी रेट इन सारण डिस्ट्रिक्ट ऑफ बिहार, पॉपुलेशन डायनामिक्सः इश्यूज, चैलेंजेज एंड सॉल्यूशंस, एड. प्रो. (डॉ.) एस. कुमार द्वारा, एम्पायर बुक्स इंटरनेशनल, नई दिल्ली, 2020।
12. ग्रेगोर, एच. ज्योग्राफी ऑफ एग्रीकल्चर इन ट्रॉपिकल लैंड्स। लंदन: प्रेंटिस हॉल, 1980।
13. जकनाडे, जी. भारतीय केंद्रीय जल और विद्युत आयोग, 1972 में बाढ़ नियंत्रण उपाय।
14. झा, ए.के. मिथिला की त्रसादी: बाढ़ और सुखर। पटना जानकी प्रकाशन, 2014।
15. केंडू, डब्ल्यू। द क्लाइमेट्स ऑफ कॉन्टिनेंट्स। लंदन: लॉन्गमैन्स पब्लिकेशन। 1961.
16. कृष्णन, एम. जियोलॉजी ऑफ इंडिया एंड बर्मा। चेन्नई: द मद्रास लॉ जर्नल ऑफिस, 1949।
17. लाल, बी.बी. जिला जनगणना पुस्तिका सारण, भारत की जनगणना, श्रृंखला-4 भाग XIII ए और बी पटना, बिहार: जनगणना संचालन निदेशालय, बिहार, 1981।
18. मंडल, आर.बी. वेटलैंड्स मैनेजमेंट इन नॉर्थ बिहार। नई दिल्ली: कॉन्सेप्ट पब्लिशर्स। कं, 2010।
19. महापंजीयक एवं जनगणना आयुक्त का कार्यालय, भारत। जनगणना डिजिटल लाइब्रेरी से क्षेत्र और पुनः प्राप्त 2017: http://www.censusindia.gov.in/census और आप क्षेत्र और जनसंख्या2013-14।
20. ओल्डहैम, आर. सोन वैली के भूविज्ञान पर नोट्स, वॉल्यूम। XXXI। भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण, 1901।
21. प्राथमिक जनगणना सार, भारत की जनगणना, खंड। मैं और द्वितीय, 2001, 2011
22. राम, आर.के. बिहार एडमिनिस्ट्रेटिव एटलस। पटना, बिहार: जनगणना संचालन निदेशालय। 2001।
23. शर्मा, एन. बिहार की भुगौलिक समीक्षा, गोरखपुर: वसुंधरा प्रकाशन.2007।
24. सिंह, जे. भारत का एक कृषि एटलस। कुरुक्षेत्र: विकास प्रकाशन, 1984।
25. सिंह, आर. रीजनल जियोग्राफी ऑफ इंडिया, वाराणसीः एन.जी.एस.आई.1972।
26. सिंह, आर.एल. इंडिया: ए रीजनल जियोग्राफी, एनजीएसआई, वाराणसी, 1971
27. सिंह, आर.पी. और कुमार, ए. बिहार का मोनोग्राफ, भारती भवन प्रकाशन, पटना, 1970।
28. सिंह, आर.एस. ईस्टर्न उत्तर प्रदेश इन इंडिया, रीजनल स्टडीज। कलकत्ता: एन.सी.जी. 1986.
29. सिंह, आर.टी. कृषि भूगोल। इलाहाबाद: प्रयाग पुस्तक भवन, 2007।
30. सिन्हा, बी.एन. पी., नाज़िम, एमडी और फ़िरोज़, पी. बिहार लैंड पीपुल एंड इकोनॉमी, राजेश प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016
31. तीरथ, रंजीत, एरियल पैटर्न्स ऑफ लिटरेसी इन इंडिया, मैनपावर जर्नल, 1966।
32. वाडिया, डी.एन. जियोलॉजी ऑफ इंडिया। एफबी एंड ई लिमिटेड, (2015)।
33. यांग, ए.ए. बाजार इंडिया: मार्केट्स, सोसाइटी एंड द कोलोनियल स्टेट इन गांगेय बिहार। कैलिफोर्निया: कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय प्रेस। 1998.